CHAPTER - 11
डायरी का एक पन्ना

प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:
26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या–क्या तैयारियाँ की गईं ?
उत्तर 1:
26 जनवरी 1931 को अमर बनाने के लिए जोर–शोर से तैयारियाँ की गई थीं ।पिछले वर्ष की अपेक्षा इस बार कार्यक्रम के प्रचार पर दो हजार रुपए खर्च किए गए थे।कार्यकर्ता घर–घर जाकर लोगों को लोगों को समझा रहं थे । बड़े बाज़ार में प्रायः लोगों के घरों पर राष्ट्रीय झंडे फहरा रहे थे ।

प्रश्न 2:
'आज जो बात थी वह निराली थी ' किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है ?स्पष्ट कीजिए।
उत्तर 2:
26 जनवरी 1931 को सुभाष बाबू के जुलूस का संपूर्ण भार पूर्णोदास पर था। स्त्रियाँ जगह से अपना जुलूस निकालने तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं मोनुमेंट के पास जैसा प्रबंध भोर में था, वैसा एक बजे तक नहीं था । तीन बजे से ही मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ जमा होने लगी तथा लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे यही सबसे निराली बात थी ।

प्रश्न 3:
पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था ?
उत्तर 3:
पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि अमुक–अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती ।जो लोग काम करने वाले थे, उन सबको इंस्पेक्टरों द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी और बता दिया गया था कि सभा में भाग लेने पर दोषी समझे जाएँगे । कौंसिल के नोटिस के अनुसार मोनुमेंट के ठीक नीचे चार बजकर चौंतीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा। और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी ।

प्रश्न 4:
धर्म तल्ले की मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उत्तर 4:
धर्मतल्ले पर पहले से ही काफी भीड़ थी । पुलिस के लाठीचार्ज कर देने के कारण बहुत से लोग घायल हो गए, इस कारण लोगों की संख्या घट गई । करीब 50–60 स्त्रियाँ मोड़ पर बैठ गईं पुलिस ने उन्हें पकड़कर लाल बाज़ार भेज दिया । इस कारण धर्म तल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया।

प्रश्न 5:
डॉ दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देखरेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 5:
डॉ. दास गुप्ता घायल लोगों के फोटो इसलिए उतरवा रहे थे क्योंकि सरकार अपने दमन चक्र को छिपाने के लिए कम संख्या बताती थी । सरकार की दोहरी नीति और जनता की भागीदारी बताने के लिए वे फोटो उतरवाते जा रहे थे ।

खंड – ख

प्रश्न 1:

सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?

उत्तर 1:

सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी जगह–जगह स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं । स्त्रियों ने मोनुमेंट की सीढ़ियों पर झंडा फहराया और घोषणा पढ़ रही थीं , बड़ी संख्या में स्त्रियाँ झंडे लिए हुए थीं।धर्मतल्ले पर उन्होंने मोड़ पर धरना दिया। पुलिस ने उन्हें पकड़कर लाल बाज़ार भेज दिया। कुल मिलाकर 105 स्त्रियाँ गिरफ्तार की गई थीं। इससे पहले एक साथ इतनी स्त्रियाँ कभी गिरफ्तार नहीं की गईं थीं।

प्रश्न 2:

जुलूस के लाल बाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

उत्तर 2:

जुलूस के लाल बाज़ार पहुँचने पर पुलिस के द्वारा वृजलाल गोयनका को पकड़ा गया पहले वह झंडा लेकर वंदेमातरम् बोलता हुआ मोनुमेंट की ओर बढ़ा उसे एक अंग्रेज़ ने लाठी मारी फिर उसे पकड़कर थेड़ी दूर पर ले जाकर छोड़ दिया । वहाँ उसने स्त्रियों के जुलूस में शामिल होकर दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लाल बाज़ार की ओर प्रस्थान किया और वहाँ पहुँचकर गिरफ्तार कर लिया गया । कुल मिलाकर 105 स्त्रियाँ गिरफ्तार की गईं जिन्हें रात को नौ बजे छोड़ दिया गया ।

प्रश्न 3:

'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है। क्या कानून भंग करना उचित था ? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर 3:

यहाँ पर अंग्रेजों के बनाए कानून को भंग करने कही बात कही गई है । पुलिस कमिश्नर का नोटिस था कि अमुक–अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं की जा सकती । जो भी व्यक्ति सभा में भाग लेगा वह दोषी समझा जाएगा । सरकार के इस कानून को भंग करना उचित था क्योंकि कोई लोकतांत्रिक सरकार अपने नागरिकों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं छीन सकती । जनता सभा , प्रदर्शन,जुलूस के माध्यम से अपनी नाराज़गी जताती है। उनके मौलिक अधिकारों को प्रतिबंधित करना किसी भी सूरत में उचित नहीं है। अंग्रेज़ी सरकार तानाशाह की तरह केवल अपने हित के बारे में सोचती थी।

प्रश्न 4:

बहुत से लोग घायल हुए , बहुतों को लॉकअप में रखा गया , बहुत–सी स्त्रियाँ जेल गईं , फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है । आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है ? अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर 4:

इस दिन के अपूर्व होने का यह कारण था क्योंकि बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ पर अंग्रेजों के खिलाफ कोई काम नहीं हो रहा था इस जुलूस के बाद यह कलंक काफी हद तक धुल गया था। लोगों की सोच में परिवर्तन आया और यहाँ की स्त्रियों ने भी बढ़–चढकर आंदोलन में भाग लिया था । लाल बाजार के लॉकअप में स्त्रियों की भारी संख्या के कारण इस दिन को अपूर्व बताया गया है ।

आशय स्पष्ट कीजिए:

1.

आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है । बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया ।

उत्तर 1:

लेखक के अनुसार बंगाल में आज जिस तरह का प्रदर्शन हुआ , वह अपने आप में अपूर्व था । इससे पहले इतने स्तर पर प्रदर्शन नहीं हुआ था । यह बंगाल के नाम पर कलंक था कि आज़ादी के नाम पर यहाँ पर कुछ भी नहीं किया गया था इस प्रदर्शन से यह कलंक कुछ हद तक धुल गया था ।

2.

खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी ।

उत्तर 2:

पुलिस कमिश्नर के नोटिस कि कहीं पर भी कोई सभा नहीं की जाएगी , प्रदर्शन में भाग लेने वालों को दोषी माना जाएगा । इसके विपरीत कौंसिल का नोटिस था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी । यह सत्ता को खुली चुनौती थी क्योंकि इससे पहले सत्ता को चुनौती देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी ।